Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-12* *December 2025***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

बिहार में मंडलवादी राजनीति और पिछड़ों का उभारः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राकेश रंजन झा

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बी. एन. एम. यू., मधेपुरा।

सारांशः बिहार की राजनीति में मंडल आयोग की सिफारिशों (1990) के कार्यान्वयन ने सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। ऊपरी जातियों के वर्चस्व को चुनौती देते हुए अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) का उदय हुआ, जिसने सामाजिक न्याय, आरक्षण और जातीय गठबंधनों को केंद्र में ला दिया। लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार जैसे नेताओं ने इस उभार को आकार दिया। यह आलेख ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख घटनाओं, प्रभावों और वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण करता है।

बिहार का सामाजिक–राजनीतिक इतिहास लंबे समय तक जातिगत संरचनाओं, वर्चस्व, असमानता और संसाधनों के असमान वितरण से प्रभावित रहा है। स्वतंत्रता के शुरुआती दशकों में यहाँ की राजनीति पर ऊँची जातियों विशेषकर भूमिहार ब्राह्मण, राजपूत और कायस्थ का प्रभुत्व था। वहीं पिछड़ी जातियाँ, विशेषकर 'अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) और अत्यंत पिछड़ा वर्ग (EBC), सामाजिक–शैक्षणिक रूप से वंचित रही थीं। इस पृष्ठभूमि में 1990 के दशक का 'मंडल दौर' न केवल बिहार बल्कि उत्तर भारत में एक सामाजिक क्रांति लेकर आया। मंडल आयोग की सिफारिशों के लागू होने से बुनियादी संरचनाओं राजनीति, नौकरशाही, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और सामाजिक पहचान में गहरे परिवर्तन उत्पन्न हुए।

कुँजीः सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, अर्थव्यवस्था, शिक्षा।

प्रस्तावनाः सन् 2005–2015 का दशक बिहार की पिछड़ी जातियों में मंडलवादी राजनीति के प्रभाव का एक महत्वपूर्ण चरण रहा है। 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशों के लागू होने से जो सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन शुरू हुआ था, वह इस अवधि में नए रूपों में सामने आया। पिछड़ी और अति–पिछड़ी जातियों ने न केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व में वृद्धि पाई, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, निर्णय लेने की क्षमता और राज्य की नीतिगत प्राथमिकताओं में भी उनकी भागीदारी और मजबूत हुई। 2005 के बाद बिहार में सत्ता परिवर्तन ने भी सामाजिक न्याय और विकास के नए मॉडल को जन्म दिया, जिसने मंडल राजनीति के प्रभाव को और गहरा किया।

इस दशक में शासन की स्थिरता, कानून–व्यवस्था में सुधार और विकास कार्यक्रमों की सक्रियता ने पिछड़ी जातियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, संसाधन वितरण एवं रोजगार अवसरों में अपेक्षाकृत अधिक पहुँच प्रदान की। पंचायतों में महिलाओं और पिछड़ी जातियों के आरक्षण ने भी स्थानीय स्तर पर नेतृत्व के नए चेहरे तैयार किए, जिससे राजनीतिक चेतना और सहभागिता व्यापक हुई। इस दौर में अति–पिछड़ा वर्ग (EBC) एक नए राजनीतिक शक्ति–समूह के रूप में उभरा, जिसे राजनीतिक दलों ने महत्वपूर्ण मतदान वर्ग के रूप में मान्यता दी।

राजनीतिक रूप से 2005–2015 का समय "सामाजिक न्याय. सुशासन" की मिश्रित अवधारणा का काल रहा, जिसमें विकास योजनाओं और कल्याणकारी नीतियों ने सामाजिक आधार को व्यापक बनाया। इस अवधि में जातिगत राजनीति अपने पारंपरिक रूप से कुछ हद तक हटकर विकास–मुखी विमर्श के साथ जुड़ी, लेकिन पिछड़ी जातियों की पहचान राजनीति बनी रही। शिक्षा के प्रसार, आर्थिक अवसरों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के कारण इन समुदायों में आत्मविश्वास बढ़ा और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी दिखाई दी।

इस प्रकार 2005–2015 का दशक मंडलवादी राजनीति के प्रभाव को सुदृढ़ करने वाला, सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण को गति देने वाला और बिहार में पिछड़ी जातियों की राजनीतिक आवाज को मजबूत बनाने वाला

एक परिवर्तनकारी चरण साबित हुआ।

मंडल आयोग और बिहार का सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ

मंडल आयोग (1979) की सिफारिशें, विशेषकर व्ठ के लिए 27% आरक्षण लागू होना, बिहार की सामाजिक–राजनीतिक संरचना में एक निर्णायक मोड़ साबित हुईं। 1990 के बाद यह नीति न केवल सामाजिक न्याय की नींव बनी, बल्कि पिछड़ी जातियों की राजनीतिक चेतना, प्रतिनिधित्व और सत्ता साझेदारी को नए आयाम प्रदान करने लगी। बिहार जैसे राज्य, जहाँ सामाजिक संरचना अत्यधिक जटिल और जातिगत असमानताएँ गहरी थीं, वहाँ मंडलवादी राजनीति एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन का उपकरण बन गई।

मंडल आयोग के प्रभाव से पिछड़ी जातियाँ पहली बार एक संगठित राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरीं। सामाजिक रूप से उपेक्षित समुदायों ने शिक्षा, नौकरियों और राजनीतिक हिस्सेदारी में समान अवसर की माँग को मुखर किया। इसी दौर में राजनीतिक दलों ने जातिगत गठबंधनों को नए सिरे से परिभाषित किया और नेतृत्व में पिछड़े वर्गों की भागीदारी बढ़ी। लालू प्रसाद यादव और बाद में नीतीश कुमार जैसे नेताओं का उदय इसी व्यापक मंडलवादी राजनीतिक पुनर्संरचना का परिणाम था, जिन्होंने "सामाजिक न्याय", "अधिकार" और "सत्ता में भागीदारी" को केंद्र में रखा।

मंडल युग के बाद राज्य की चुनावी राजनीति में OBC– बमदजतपब राजनीतिक विमर्श स्थापित हुआ। सत्ता संरचना में भूमिहार– राजपूत–कायस्थ–ब्राह्मण जैसे सवर्ण प्रधान ढाँचे की जगह धीरे–धीरे यादव, कुर्मी, कोइरी, पासवान और अन्य पिछड़ी जातियों की निर्णायक उपस्थिति बनी। शिक्षा, नौकरियों और सरकारी संस्थाओं में भी उनकी सहभागिता में वृद्धि हुई, जिससे सामाजिक गतिशीलता के नए अवसर खुले।

वर्तमान समय में, यद्यपि मंडलवादी राजनीति कभी–कभी जातिवादी ध्रुवीकरण भी उत्पन्न करती रही है, फिर भी यह नकारा नहीं जा सकता कि इसने बिहार में लोकतांत्रिक भागीदारी, सामाजिक न्याय और हाशिये पर पड़े समुदायों की राजनीतिक सशक्तिकरण प्रक्रिया को गहरी मजबूती दी है। मंडल आयोग बिहार की सामाजिक–राजनीतिक पहचान का स्थायी आधार बन चुका है।

1990–2005: मंडल क्रांति और पिछड़ी जातियों का राजनीतिक उदय

1990 का दशक भारतीय राजनीति, विशेषकर बिहार की सामाजिक संरचना, के लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। मंडल आयोग की सिफारिशों को करने के बाद जो सामाजिक उथल–पुथल उत्पन्न हुई, उसने राजनीति की पारंपरिक धारा को पूरी तरह बदल दिया। इस अवधि में पिछड़ी जातियों की राजनीतिक चेतना, प्रतिनिधित्व और शासन में भागीदारी तेजी से बढ़ी द्य बिहार इस परिवर्तन का सबसे प्रमुख केंद्र बना, जहाँ 1990 से 2005 तक मंडलवादी राजनीति ने सामाजिक संरचना और सत्ता समीकरणों को गहराई से प्रभावित किया।

1. मंडल आयोग का प्रभाव और सामाजिक चेतना का उभार

- 1990 में वी. पी. सिंह सरकार द्वारा मंडल आयोग की 27% आरक्षण सिफारिशें लागू होते ही पिछड़ी जातियों में एक नई राजनीतिक चेतना विकसित हुई। सदियों से सामाजिक–आर्थिक रूप से हाशिये पर रखे गए वर्गों को पहली बार लगा कि राज्य उनकी पहचान, अधिकार और प्रतिनिधित्व को मान्यता दे रहा है। इसने बिहार की पिछड़ी जातियों विशेषकर यादव, कुर्मी, कोईरी, धीवर, नाई, तेली, अति–पिछड़ी जातियों में एक व्यापक राजनीतिक जागरण पैदा किया।
- यह जागरण केवल आरक्षण तक सीमित नहीं था इसने सत्ता में हिस्सेदारी के सवाल को केंद्र में ला दिया। मंडलवादी राजनीति का मुख्य संदेश था सत्ता में संख्या के अनुसार भागीदारी।
- इस विचार ने पिछड़ी जातियों को पारंपरिक सामाजिक वर्चस्व के विरुद्ध संगठित किया और राजनीतिक मंचों पर उनकी आवाज तेज हो गई।

2. लालू प्रसाद यादव और सामाजिक न्याय की राजनीति

- बिहार में मंडलवाद का सबसे प्रभावी चेहरा लालू प्रसाद यादव बनकर उभरे। 1990 में वे मुख्यमंत्री बने और उन्होंने 'सामाजिक न्याय' को शासन का मूल सिद्धांत बताया। उनके नेतृत्व में राजनीति जाति– समानता की ओर मुड़ी। पिछड़ी जातियों, दलितों और अल्पसंख्यकों के लिए यह दौर एक पहचान – क्रांति जैसा था।
- बिहार भारत की जातीय राजनीति का सबसे प्रमुख प्रयोगशाला रहा है। स्वतंत्रता के बाद ऊपरी जातियों (ब्राह्मण, भूमिहार, राजपूत) का वर्चस्व था, लेकिन समाजवादी आंदोलनों, कर्पूरी ठाकुर की आरक्षण नीति

और मंडल आयोग ने पिछड़े वर्गों (OBC) को राजनीतिक मुख्यधारा में लाया। मंडलवादी राजनीति ने 'सामाजिक न्याय' को नारा बनाकर OBC, मुस्लिम और दलितों के गठबंधन को मजबूत किया, जिससे बिहार की सत्ता संरचना बदली।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **1930 के दशक:** यादव, कुर्मी और कोएरी (कुशवाहा) जैसी कृषक पिछड़ी जातियों ने त्रिवेणी संघ बनाकर ऊपरी जातियों के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। जनेऊ आंदोलन ने भी इन जातियों में जागृति पैदा की।
- **1960–70 के दशक:** बी. पी. मंडल (यादव) ने शोषित दल बनाया और 1968 में बिहार के पहले OBC–प्रधान मुख्यमंत्री बने। कर्पूरी ठाकुर (जनता पार्टी) ने 1978 में राज्य नौकरियों में पिछड़ों के लिए आरक्षण लागू किया (8% OBC, अतिपिछड़ों के लिए अतिरिक्त)। जेपी आंदोलन ने भी OBC नेतृत्व को बढ़ावा दिया।

मंडल उभार और लालू युग (1990–2005)

- 1990 में लालू प्रसाद यादव (जनता दल, बाद में ल्श्रक) मुख्यमंत्री बने। उन्होंने MY फॉर्मूला (मुस्लिम–यादव) पर जोर दिया, जो लगभग 30% वोट बैंक था।
- पिछड़ों और अल्पसंख्यकों को सत्ता में प्रतिनिधित्व मिला।
- 'सामाजिक न्याय' के नाम पर प्रशासन में OBC की भागीदारी बढ़ी।
- हालांकि, विकास की उपेक्षा, लूट (चारा घोटाला) और अराजकता की आलोचना हुई। यादवों का वर्चस्व (यादवीकरण) अन्य OBC (कुर्मी– कोएरी) में असंतोष पैदा कर गया।
- यह दौर पिछड़ों का उभार का प्रतीक था, जहां ऊपरी जातियों का राजनीतिक प्रभुत्व समाप्त हुआ।

नीतीश कुमार का युगः विभाजन और सामाजिक इंजीनियरिंग

- लालू के बाद नीतीश कुमार (JD(U)) ने नॉन–यादव व्ठब और अतिपिछड़ा (EBC) को आधार बनाया।
- स्नअ.ज्ञनेी समीकरणः कुर्मी–कोएरी गठबंधन।
- महादलित रणनीति और EBC पर फोकस।
- विकास, कानून–व्यवस्था और आरक्षण में सूक्ष्म विभाजन (OBC-A, OBC-B) पर जोर।
- BJP के साथ गठबंधन ने ऊपरी जातियों को भी शामिल किया।
- नीतीश ने मंडल राजनीति को सामाजिक न्याय सुशासन में बदला।

प्रभाव और विश्लेषण

सकारात्मक प्रभावः

- OBC की राजनीतिक भागीदारी बढ़ीय आज बिहार की मुख्य पार्टियों (RJD, JD(U)) का नेतृत्व OBC के हाथ में है।
- जातीय जागृति और सशक्तिकरण।
- आरक्षण नीति ने शिक्षा और नौकरियों में अवसर बढ़ाए।

नकारात्मक प्रभावः

- जातीय ध्रुवीकरण गहरायाय विकास पिछड़ा।
- भ्रष्टाचार और अराजकता (लालू युग)।
- OBC में भी आंतरिक विभाजन (यादव अे नॉन–यादव, EBC)।
- ठश्रच जैसी पार्टियों को बिहार में मंडल राजनीति के कारण चुनौतियां।

वर्तमान संदर्भ (2025–26): जातीय सर्वेक्षण, व्ठब एकीकरण, समराट चौधरी जैसे नए चेहरे और विकास अे पहचान की बहस जारी है। RJD और JD(U) अभी भी व्ठब वोट बैंक पर निर्भर हैं।

वर्तमान परिदृश्य (2015–2025): मंडलवाद का विस्तार और नए आयाम

2005–2015 का दौर बिहार की मंडलवादी राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी चरण माना जाता है। यह वह समय था जब मंडल आयोग की संस्तुतियों से उत्पन्न पिछड़ी जातियों की राजनीतिक चेतना न केवल

संस्थागत रूप ले चुकी थी, बल्कि सत्ता, विकास और शासन के नए मॉडलों से भी जुड़ने लगी थी। 2005 के बाद राज्य में शासन–प्रशासन की मजबूती, आधारभूत संरचनाओं का विकास और कानून–व्यवस्था में सुधार ने पिछड़ी जातियों के लिए सामाजिक–आर्थिक अवसरों को बढ़ाया। ग्रामीण सड़कों, विद्यालयों, छात्रवृत्ति, महिला सशक्तिकरण योजनाओं तथा पंचायत स्तरीय प्रतिनिधित्व ने ओबीसी तथा इबीसी वर्गों के लोगों को पहली बार स्थानीय से लेकर राज्य–स्तर तक राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी का अवसर दिया।

इस दशक में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह भी देखने को मिला कि पिछड़ी जातियों की राजनीति केवल पहचान आधारित नहीं रही, बल्कि विकास आधारित राजनीति के साथ संयोजित होने लगी। शिक्षा, रोजगार और स्थानीय नेतृत्व की उभरती मांगों ने मंडलवादी राजनीति को एक नए सामाजिक विमर्श की ओर प्रेरित किया। एनटीपीसी नियोजन, औद्योगिक कॉरिडोर, और छात्र व युवाओं में तकनीकी शिक्षा के विस्तार ने भी पिछड़े तबकों में नई आकांक्षाओं को जन्म दिया। पिछड़े वर्ग की महिलाएँ भी मुखिया, वार्ड सदस्य और अन्य स्थानीय निकायों में बड़ी संख्या में चुनी जाने लगीं, जिससे स्त्री–नेतृत्व आधारित मंडलवाद की नई धारा दिखाई दी।

2015–2025 का वर्तमान परिदृश्य

2015 के बाद मंडलवादी राजनीति ने और अधिक संस्थागत और वैचारिक विस्तार प्राप्त किया। सामाजिक न्याय की राजनीति अब केवल आरक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि "प्रतिनिधित्व", "भागीदारी" और "समान अवसर" की व्यापक अवधारणाओं पर आधारित होने लगी। इस दौरान जातिगत गणना (Caste Census) की मांग और उसके डेटा जारी होने की प्रक्रिया ने बिहार में मंडलवादी राजनीति को एक नवीन वैधता प्रदान की। जनगणना आधारित सामाजिक–आर्थिक स्थिति ने पिछड़ी, अति पिछड़ी और दलित जातियों की वास्तविक जनसंख्या और संसाधनों की उपलब्धता के बीच असमानताओं को सामने लाया। इससे राजनीतिक दलों के एजेंडा में सामाजिक न्याय के साथ आर्थिक न्याय भी प्रमुख रूप से शामिल होने लगा।

2015–2025 की अवधि में पिछड़ी जातियों के भीतर शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता और डिजिटल पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। तकनीकी संस्थानों, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, कौशल विकास कार्यक्रमों और सरकारी योजनाओं ने पिछड़े वर्ग के युवाओं में नई राजनीतिक चेतना और नेतृत्व क्षमता विकसित की। अब पिछड़ी जातियों की राजनीति में केवल परंपरागत नेतृत्व का प्रभुत्व नहीं रहा, बल्कि युवाओं, छात्रों, महिलाओं और ओबीसी– इबीसी पेशेवर वर्ग का हस्तक्षेप भी बढ़ा।

इस दशक में मंडलवाद का सबसे बड़ा नया आयाम राजनीतिक समावेशिता रहा, जिसमें दलित–पिछड़ा एकता, अल्पसंख्यकों की भागीदारी और हाशिये के समूहों का प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दे उभरकर आए। सोशल मीडिया और डिजिटल राजनीति ने मंडलवादी विमर्श को नई दिशा दी, जहाँ पहचान के साथ–साथ रोजगार, आर्थिक समानता, सामाजिक सुरक्षा और शिक्षा अधिकार जैसे मुद्दे भी केंद्र में रहे।

इस प्रकार 2005–2015 और 2015–2025, दोनों दशकों में मंडलवादी राजनीति अपनी पारंपरिक पहचान आधारित संरचना से आगे बढ़कर सामाजिक–आर्थिक न्याय, लोकतांत्रिक भागीदारी और अवसरों के विस्तार की राजनीति बन गई है। आज मंडलवाद केवल पिछड़ी जातियों का आंदोलन नहीं बल्कि बिहार के सामाजिक परिवर्तन और समावेशी विकास का एक व्यापक वैचारिक आधार बन चुका है।

निष्कर्ष: 1990 से वर्तमान तक बिहार की पिछड़ी जातियों पर मंडलवादी राजनीति का प्रभाव गहरा, बहुआयामी और ऐतिहासिक रहा है। इसने शक्ति–संबंधों के पुराने ढाँचों को तोड़ा और बिहार को सामाजिक न्याय के नए युग में प्रवेश कराया। आरक्षण के माध्यम से शिक्षा और रोजगार में अवसर बढ़े, जिससे पिछड़ी जातियों में पहली बार एक सशक्त मध्यमवर्ग का विकास हुआ। राजनीतिक रूप से पिछड़ी जातियाँ केंद्र में आईं और सत्ता संरचना में उनका वर्चस्व स्थापित हुआ।

लालू यादव ने मंडलवाद को सांस्कृतिक क्रांति का रूप दिया जहाँ बहुसंख्यक पिछड़ों को राजनीतिक आत्मविश्वास मिला। नीतीश कुमार ने इसे 'विकास और सुशासन' से जोड़कर प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर नई संरचनाएँ बनाई। वर्तमान दौर में जाति जनगणना, आरक्षण बहस, राजनीतिक पुनर्संरचना और नए नेतृत्व के उभरने से मंडलवाद की प्रासंगिकता और गहरी हो गई है।

हालाँकि चुनौतियाँ भी मौजूद हैं पिछड़ों के भीतर असमानता, जातीय ध्रुवीकरण, आरक्षण पर अत्यधिक निर्भरता– लेकिन फिर भी मंडलवादी राजनीति ने बिहार की सामाजिक चेतना, सत्ता संरचना, आर्थिक गतिशीलता और सांस्कृतिक आत्मबोध को नया आयाम दिया है।

मूलतः मंडलवाद ने बिहार के लोकतंत्र को अधिक समावेशी, प्रतिनिधिक और जनोन्मुख बनाया है। यह केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की दीर्घकालिक प्रक्रिया है, जो आने वाले

समय में भी बिहार के सामाजिक– राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करती रहेगी।

मंडलवादी राजनीति ने बिहार में लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाया, लेकिन सत्ता के वितरण के साथ विकास की चुनौती बनी रही। पिछड़ों का उभार अपरिवर्तनीय है, फिर भी आर्थिक सुधार, शिक्षा और रोजगार पर ध्यान दिए बिना यह अधूरा रहेगा। भविष्य में जाति से परे 'समावेशी विकास' की राजनीति की जरूरत है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. सिन्हा, सच्चिदानन्द, लोकतंत्र की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
2. डॉ. हरिनारायण ठाकुर, भारत में पिछड़ा वर्ग आन्दोलन और परिवर्तन का नया समाजशास्त्र, कल्पज पब्लिकेशन्स, प्रकाशन वर्ष– 2009, दिल्ली.
3. डॉ० विष्णुदेव रजक, कर्पूरी ठाकुर का राजनीतिक दर्शनरू दलितों और पिछड़ों के मसीहा के रूप में, जानकी प्रकाशन, प्रथम संस्करण– 2012, पटना एवं नई दिल्ली.
4. प्रसन्न कुमार चौधरी, स्वर्ग पर धावा बिहार में दलित आन्दोलन, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण–2005, नई दिल्ली.
5. अब्जर्वर रीसर्च फाउंडेशन, भारत, पहचान की राजनीति, चुनाव और परिणामः क्या 2019 का लोकसभा चुनाव हमें विधानसभा चुनावों का संकेत देता, 2019.
6. थॉमस, केवी (2014) लेफ्ट विंग एक्सट्रिमिज्म एंड हयूमन राइट्स, नई दिल्लीः सेज पब्लिशर्स मिश्रा, वंदिता, (2011) दि लॉन्ग रोड टू नूतन बिहार, सेमिनार मैगेजिन, इश्यू ऑन 620, रीट्रीव्ड फ्रॉम http://www.india-seminar.com/2011/620/620 vandiata mishra.html
7. झा, मनीष एंड पुष्पेंद्रा (2012) गवर्निंग कॉस्ट एंड मैनेजिंग कॉन्फ्लिक्ट्स इन बिहार पॉलिसीज एंड पैक्टिसेज, इश्यु नंबर 48, पृष्ठ 6–7.
8. प्रसाद, पीएच (1987) अग्रेरियन वॉयलेंस इन बिहार, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 22 (22), 847–852.

Cite this Article

"राकेश रंजन झा" "बिहार में मंडलवादी राजनीति और पिछड़ों का उभारः एक विश्लेणात्मक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:12, December 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i12007

Published Date- 05 December 2025